- कार्य के कम सप्ताह और समय पूर्व सेवानिवृत्ति दोनों ही मामलों में **अवकाश के समय में वृद्धि** ने ऐसी गतिविधियों में संलग्न लोगों की संख्या में वृद्धि की है।
- **उच्च शैक्षिक स्तर** से दबाव समूहों में योगदान करने हेतु संगठनात्मक कौशल वाले लोगों की संख्या में वृद्धि हुई है।
- **लैंगिक भूमिकाओं में परिवर्तन** ने दबाव समूह गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी में आने वाली बाधाओं को समाप्त कर दिया है।
- **राजनीतिक दलों की सदस्यता में गिरावट आयी है**। यह तर्क दिया गया है कि यह समाज में लोगों के विभिन्न समूहों की आवश्यकताओं को प्रतिबिंबित करने में राजनीतिक दलों की पर्याप्त रूप से विफलता को दर्शाता है, और इसके कारण समूह राजनीतिक बदलाव लाने के लिए एक अधिक आशाजनक मार्ग प्रदान करते हैं।

8.1.2. वैश्वीकरण

- वैश्वीकरण ने विभिन्न तरीकों से दबाव समूहों को सशक्त किया है। विशेष रूप से, यह सामान्य सहमति है कि व्यापारिक समूह वैश्विक युग में और अधिक शक्तिशाली हो गए हैं क्योंकि वे उत्पादन और निवेश का स्थानांतरण अधिक आसानी से कर सकते हैं। ऐसे रुझानों से सरकारों पर पड़ने वाले दबावों में वृद्धि हुई है, उदाहरण के लिए, व्यावसायिक करों में कटौती और कॉरपोरेट विनियम को कम करना।
- वैश्वीकरण की अन्य विशेषता वर्ल्ड डेवलपमेंट मूवमेंट और वर्ल्ड सोशल फोरम जैसे गैर-सरकारी संगठनों का वैश्विक स्तर पर प्रमुख अभिकर्ता के रूप में उभरना है। उदाहरण के लिए, 1992 में रियो डी जनेरियो में संपन्न हुए अर्थ समिट में लगभग 2,400 NGOs ने भाग लिया।

8.2. दबाव समूहों की अवनति

- हालांकि, सभी लोग यह नहीं मानते कि दबाव समूह अधिक शक्तिशाली हो गए हैं। कुछ लोगों का मानना है कि हाल के वर्षों में, दबाव-समूह की शक्ति में कमी हुई है। ऐसे तर्क सामान्यतः दो घटनाओं में से एक पर आधारित होते हैं:

8.2.1. निगमवाद/ कॉरपोरेटिज्म का अंत

- कुछ लोगों का मानना है कि दबाव समूह के प्रभाव का सर्वोच्च बिंदु 1970 में था (विशेषरूप से विकसित देशों के मामले में)। यह, तथाकथित त्रिपक्षीय सरकार या निगमवाद/ कॉरपोरेटिज्म की अवधि थी। इसलिए इस दौरान आर्थिक नीतियां वस्तुतः नियमित परामर्श और समूह संबंधी सौदेबाजी की प्रक्रिया के माध्यम से विकसित की गईं।
- हालांकि, 1980 के दशक में निगमवाद/ कॉरपोरेटिज्म को विघटित कर दिया गया और इसे कभी भी पुनःस्थापित नहीं किया गया।

'कॉरपोरेटिज्म' आर्थिक मामलों पर निर्णय लेने में सरकार और आर्थिक हित समूहों (ट्रेड यूनियन और नियोक्ता संगठनों) के मध्य निकट संबंधों को संदर्भित करता है।

8.2.2. सार्थक और सक्रिय भागीदारी में कमी

दबाव समूहों की शक्ति में कमी का एक वैकल्पिक विवरण इस विचार को खंडित करता है कि हाल के वर्षों में समूह गतिविधि में वृद्धि देखी गई है। इस विवरण के अनुसार यद्यपि समूह की सदस्यता में वृद्धि हुई है, लेकिन ये सदस्य अत्यधिक निष्क्रिय हो गए हैं।

VISION IAS